

हिंदी भाषा और भविष्य की राह

अन्नू इंदौरा*

हिंदी भाषा भारत राष्ट्र की भाषा है। यह भाषा भूगोल की दृष्टि से भारत के एक-तिहाई से भी अधिक भाग के लोगों द्वारा बोली, समझी और पढ़ी जाती है। यही नहीं बल्कि भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी भाषा एकमात्र ऐसी भाषा है जो प्रारंभ से ही भारत देश में चर्चा और विमर्शों की भाषा रही है। वास्तव में प्रत्येक भाषा-भाषी का अपने क्षेत्र की भाषा के प्रति अपने झुकाव को ज़ाहिर करना स्वाभाविक भी है, किंतु देश में हिंदी भाषा के ऐतिहासिक भूमिका और महत्व को देखते हुए उसकी केंद्रीय स्थिति से इनकार नहीं किया जा सकता है। वर्तमान संदर्भ में ही यदि बात की जाए तो जो लोग आज के युग को अंग्रेज़ी प्रधान युग कहते हैं, उन्हें हिंदी भाषा की वास्तविक स्थिति के विषय में भी जानना आवश्यक है। किसी भाषा की स्थिति को जानने का माध्यम उसे बोलने, समझने वाले लोगों की संख्या के साथ उसमें अपना दैनिक, शैक्षिक और व्यावसायिक काम करने वालों की संख्या भी होती है। हिंदी भाषा पर चूँकि वर्षों से वाद-विवाद व संवाद सबसे अधिक होता रहा है, इसलिए हिंदी भाषा की रोजगारपरक संभावनाओं की पड़ताल करना अपने आप में आवश्यक ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह प्रश्न उठने स्वाभाविक है कि आज यह हिंदी भाषा हमें क्या दे रही है, इसके बिना हम क्या खो देंगे, यह कैसे विश्व के देशों में भारत को एक अलग पहचान दिलाती है आदि प्रश्नों के उत्तर हमें हिंदी भाषा के महत्व और प्रयोग को समझने में सहायक होंगे।

वर्षों से भारत देश न केवल विश्वगुरु है, बल्कि यह विश्व का आध्यात्मिक गुरु भी रहा है। आज भारत के अनेकों धार्मिक स्थलों पर दुनिया के विभिन्न देशों के लाखों विदेशियों को देखा जा सकता है, जो

भारत की पुण्यभूमि पर अपनी आध्यात्मिक उन्नति और शांति प्राप्ति के उद्देश्य से आकर शरण लेते हैं और संस्कृत तथा हिंदी भाषा को सहज ही सीख लेते हैं। आध्यात्मिकता की क्षुधा लिए इन विभिन्न

*शोधार्थी व सहायक प्रोफेसर (हिंदी), राजकीय कन्या महाविद्यालय, गुरुग्राम, हरियाणा

विदेशी लोगों ने भी हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यूरोपीय विद्वान फादर कामिल बुल्के हिंदी प्रेम के कारण बैल्जियम की नागरिकता त्याग कर भारत के नागरिक बने तथा जीवन पर्यंत भारत में ही रहे। यह हिंदी के ऐतिहासिक वैश्विक प्रभाव का मात्र एक प्रमाण है। ऐसे हजारों उदाहरण हमारे पास हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा को पुष्पित और पल्लवित करने में अनेक भारतीय और गैर-भारतीय लोगों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सराहनीय योगदान को दिखाते हैं और विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी भाषा की गहरी जड़ें होने के प्रमाण को साबित होते हैं।

एक समाज में किसी भी भाषा के अस्तित्व की अक्षुण्णता के लिए उस भाषा का रोजगारपरक होना अत्यंत आवश्यक है। इस संदर्भ में हिंदी भाषा की रोजगारपरक संभावनाओं का क्षितिज अत्यंत विस्तृत है। वास्तव में एक जीवित भाषा वही होती है जो स्वयं को समाज, समय की परिस्थितियों के अनुसार गति दे सके। इस दृष्टि से हिंदी भाषा की स्थिति और उसमें रोजगार का अवलोकन किया जाए तो हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल है। हिंदी भाषा का विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनने का एक कारण यह भी है कि आज न केवल हिंदी भाषा में ज्ञान प्राप्ति के माध्यम बढ़ रहे हैं, बल्कि उस ज्ञान का प्रयोग कर सकने के लिए मंच भी मिल रहे हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आज हिंदी भाषा का प्रयोग और उपयोग दोनों बढ़े हैं। प्रस्तुत लेख में आगे उन महत्वपूर्ण क्षेत्रों की चर्चा की गई है जिसने हिंदी भाषा के पंखों में नई जान डाल दी है। यहाँ हिंदी भाषा

के महत्व के साथ क्रमवार रूप से उन क्षेत्रों की चर्चा की गई है, जिसमें हिंदी भाषा प्रयोक्ता अपने लिए रोजगार की संभावनाओं को देखते हुए अपने भविष्य को आकार दे सकते हैं—

अनुवाद— सर्वप्रमुख हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाओं को अनुवाद के क्षेत्र में देखा जा सकता है। आज वैश्वीकरण के बहुसांस्कृतिक परिदृश्य में विश्व की विभिन्न भाषाओं में उपस्थित ज्ञान संपदा तक अपनी पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए अनुवाद का क्षेत्र महत्वपूर्ण है। आज विश्व के प्रसिद्ध रचनाकारों की पुस्तकें हों या वैज्ञानिक तकनीकी विषयों की पुस्तकें या प्रेरणादायक या अध्यात्मिक पुस्तकों की विषयवस्तु सभी कुछ का अनुवाद हिंदी भाषा में आज तेजी से हो रहा है। अतः अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत संभावनाओं से भरा क्षेत्र है। हिंदी में वैज्ञानिक तकनीकी विषयों की जानकारी आम लोगों तक पहुँचाने के लिए इनसे संबंधित विषयवस्तु के अनुवाद की अपार संभावनाएँ आज मौजूद हैं। ज़रूरत है कि विषय का गहन ज्ञान और भाषा पर मज़बूत पकड़ हो।

प्रकाशन संस्था— आज हिंदी भाषा के पाठकों की संख्या पहले की अपेक्षा बढ़ी है। ऐसे में सृजनात्मक, रचनात्मक लेखन में रुचि रखने वाले लोग कविता, कहानी, पुस्तकें लिखकर लेखक के रूप में स्वयं को स्थापित कर सकते हैं। साथ ही अन्य लोगों द्वारा हिंदी भाषा में लिखी जाने वाली प्रकाशनाधीन पुस्तकों की प्रूफरीडिंग एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ पुस्तक को उसके अंतिम रूप में आने तक के सफर में योगदान दिया जा सकता है।

शिक्षा— शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा का प्रयोग और अवसर बढ़े हैं। शिक्षा के प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च स्तर के लिए पाठ्यपुस्तक, अन्य सहायक पाठ्यसामग्री और अभ्यास-कार्य पुस्तक निर्माण का कार्य किया जा सकता है।

अध्यापन— हिंदी भाषा में शोध के साथ हिंदी भाषा और साहित्य शिक्षण के क्षेत्र में आज अपार संभावनाएँ हैं। इसी के साथ कोरोना काल के कारण हम देखते हैं कि ऑनलाइन शिक्षण भी हमारी ज़रूरत के रूप में उभरकर आया है। अतः यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

विदेशी विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य— आज विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना की जा चुकी है। यह इस बात का प्रमाण है कि आज के तकनीकी और अंग्रेजी प्रधान युग में भी हिंदी भाषा ने अपनी प्रासंगिकता और आवश्यकता को कम नहीं होने दिया है। विश्व में हिंदी के प्रसार में इन विदेशी विश्वविद्यालयों के हिंदी प्रेम और ज़रूरत ने भी हिंदी भाषा में रोज़गार के अवसरों को जीवंत बनाया हुआ है।

पत्रकारिता— पत्रकारिता के अंतर्गत विभिन्न न्यूज एजेंसीस में हिंदी भाषा में विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों की अच्छी जानकारी के साथ हिंदी भाषा की अच्छी व्याकरणिक तथा संदर्भगत समझ रखने वाले लोगों की हमेशा से ही आवश्यकता रही है। अतः इस क्षेत्र में संपादक, पत्रकार आदि के रूप में अपना कार्य प्रारंभ किया जा सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया— इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का कार्यक्षेत्र आज निरंतर विस्तृत होता जा रहा है जिसने

इस क्षेत्र में पहले से बहुत अधिक नवीन कार्य श्रेणियों को विकसित किया है। न्यू मीडिया के रूप में आज सोशल मीडिया के रूप में यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, पॉडकास्ट आदि में हिंदी भाषा के लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अनगिनत अवसर प्रदान कर रहे हैं। इन मंचों पर नित्य नवीन विषयवस्तु को बनाने और लिखने की चुनौती रोज़गार के नवीन आयामों को खोलती है। आज इन माध्यमों की विषयवस्तु को देखने, पढ़ने, सुनने वाले दर्शकों और पाठकों की संख्या लाखों में बढ़ती जा रही है।

फिल्म जगत— फिल्म की दुनिया इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहाँ पटकथा लेखन, संवाद लेखन, डबिंग के क्षेत्र में कुशल हिंदी भाषी लोगों के लिए अवसर हैं।

विज्ञापन— विज्ञापन का क्षेत्र हिंदी भाषी लोगों के लिए अत्यंत संभावनाओं से भरा क्षेत्र है। आज हिंदी विश्व की तीसरी बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है, ऐसे में विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पादों को अधिसंख्य ग्राहकों तक कम समय में पहुँचाने के लिए जन-भाषा हिंदी को ही प्राथमिकता दे रही हैं। अतः इस संदर्भ में कंपनियों को उत्पाद के लिए आकर्षक स्लोगन लेखन की आवश्यकता सदा रहती है। इस क्षेत्र में डिजिटल मार्केटिंग में भी हिंदी भाषा प्रयोक्ताओं के लिए बहुत अवसर हैं। जहाँ भाषा कौशल के साथ अच्छे तकनीकी ज्ञान की भी दरकार रहती है।

बैंक— सभी बैंकों में चाहे वे सरकारी हों, गैर-सरकारी या अर्द्ध सरकारी, उनमें एक हिंदी भाषा अधिकारी की नियुक्ति अनिवार्य है, ताकि बैंक समय-समय पर

ग्राहक से संबंधित सभी आवश्यक सूचनाओं को जन-भाषा में उन तक पहुँचा सके। अतः बैंकों में हिंदी भाषियों के लिए काफ़ी अवसर हैं।

प्रशासनिक सेवा— आज लगभग सभी उच्च सरकारी पदों की नियुक्ति के लिए होने वाली परीक्षाओं में हिंदी भाषा को माध्यम के रूप में अपनाकर अपनी सेवाएँ हिंदी भाषा के माध्यम से देने के अवसर हैं। अतः प्रशासनिक सेवाओं में जाकर अपने भविष्य की राह तय की जा सकती है। इसी क्रम में देख सकते हैं कि भारत सरकार के सभी विभागों, कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी जैसे पदों की अनिवार्यता हिंदी में भविष्य की राह को व्यापक बनाती है।

हिंदी वेबसाइट्स— आज हिंदी में और हिंदी साहित्य से संबंधित बहुत-सी साहित्यिक वेबसाइट्स बनाई जा चुकी हैं। जो हिंदी में अच्छी गुणवत्तापूर्ण और प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध करा रही हैं। अतः ऐसी साइट्स के लिए विषयवस्तु लेखन का कार्य एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। हिंदी भाषी पाठकों को संबोधित करने के उद्देश्य से बहुत-सी ई-पत्रिकाएँ भी अब अस्तित्व में आ चुकी हैं जिनके लिए नियमित रूप से विषयवस्तु लेखन का कार्य किया जा सकता है।

पर्यटन— भारतीय समाज, संस्कृति की विविधता और अनूठेपन के प्रति दुनिया के लोगों की आरंभ से ही एक स्वाभाविक जिज्ञासा और रुचि रही है। ऐसे में विदेशी लोगों को भारत देश के वैविध्यपूर्ण वैभव से परिचय कराने का काम विदेशी भाषा के साथ हिंदी भाषा जानने वाले लोग अधिक अच्छे से कर सकते हैं, क्योंकि अपनी भाषा से जुड़ने का अर्थ है अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ना और अपनी सांस्कृतिक

जड़ों से जुड़ने का सबसे सशक्त माध्यम अपनी भाषा ही हो सकती है।

ब्लॉग लेखन— सृजनात्मक लेखन का एक प्रकार ब्लॉग लेखन है। आज हिंदी भाषा में बहुत से ब्लॉग बनाए जा चुके हैं जो अत्यंत महत्वपूर्ण और गुणवत्तापूर्ण जानकारी देने में सक्षम हैं। कुछ ब्लॉग तथ्य और जानकारी-आधारित सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं तो कुछ मनोरंजनात्मक उद्देश्य के साथ लेखक की स्वयं की रुचि से संबंधित जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं। विभिन्न प्रकार के फूड ब्लॉग्स और यात्रा अनुभवों पर आधारित ब्लॉग्स इसके उदाहरण हैं। अतः सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में हिंदी भाषियों के लिए अपार अवसर हैं जहाँ वे नित्य नवीन विषयों पर अपने नवोन्मेषी विचारों को लिखकर दुनिया के सामने रख सकते हैं।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग— हिंदी भाषा के ज्ञान के प्रसार के लिए सक्रिय वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के कार्यलयों में कार्य किया जा सकता है। शब्दावलियों के निर्माण और विकास के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर ग्रंथ निर्माण योजना की भी शुरुआत की गई है। अतः इस प्रकार की योजनाओं में कार्य कर नया अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। वास्तव में आज वैज्ञानिक और तकनीकी के क्षेत्र में ही सबसे अधिक हिंदी भाषा के जानकार लोगों की आवश्यकता है, ताकि तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान को भी हिंदी के एक पाठक वर्ग के लिए सुलभ बनाया जा सके।

इसके अतिरिक्त कॉल सेंटर, रेडियो जॉकी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिसमें हिंदी भाषी लोग अपना अच्छा भविष्य बना सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अपनी वैश्विक पहचान बना चुकी हिंदी भाषा को माध्यम के रूप में अपनाते हुए हम स्वावलंबन के विभिन्न क्षेत्रों में अपना भविष्य गढ़ सकते हैं। आज के तेजी से बदलते दौर में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ हिंदी भाषी लोगों ने अपनी प्रतिभा द्वारा सकारात्मक हस्तक्षेप न किया हो ऐसे में हमें जरूरत है कि हम हिंदी भाषा को लेकर फैले भ्रम से बाहर निकलें और अपनी स्व-भाषा के महत्व को समझते हुए न केवल शिक्षा के क्षेत्र में सीखने-सिखाने और ज्ञान अर्जन के माध्यम के रूप में हिंदी भाषा को अपनाएँ, बल्कि रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में उभरती हिंदी की नई जमीन से भी खुद को जोड़ते हुए देश के प्रति अपने नागरिक उत्तरदायित्व को निभाने का प्रयास करें।

आज धर्म, संगीत, साहित्य, ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, अनुवाद, लेखन, प्रकाशन, प्रशासनिक पद, सिनेमा, विज्ञापन, व्यापार, अर्थव्यवस्था, दर्शन, चिंतन, शिक्षण और शोध आदि ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ हिंदी भाषा का प्रयोग और प्रसार ना हो रहा हो। मुख्य बात नज़रिए की है, क्योंकि भाषा चाहे कोई भी हो हमारी पहचान का पहला साधन होती है। ऐसे में जहाँ तक हिंदी भाषा की बात है तो इसके विकास की ऐतिहासिक कड़ियों को समझते हुए उसे माध्यम के रूप में अपनाकर हिंदी भाषा के बोलने वाले अपनी स्वयं की संस्कृति, वर्तमान स्थिति और पहचान को मज़बूती प्रदान कर सकते हैं। विश्व पटल

पर हिंदी भाषा के प्रसार और उज्ज्वल भविष्य का कारण हिंदी की अपनी आंतरिक शक्ति, गुणवत्ता, सरलता एवं लोकप्रियता ही है। इसे भारत में भी कम नहीं होने देना है और यह दायित्व हिंदी भाषी लोगों पर अधिक है, क्योंकि गैर-हिंदी भाषियों द्वारा हिंदी के प्रचार और विस्तार के अनेकों उदहारण हमारे पास मौजूद हैं (आज कई फिल्मों हस्तियाँ और अंग्रेजी माध्यम के लोग हिंदी में पुस्तकें प्रकाशित या अनुवाद करवा रहे हैं, अपने यूट्यूब चैनल आदि बना रहे हैं, हिंदी भाषा सीख रहे हैं), किंतु हिंदी भाषियों को भी अपनी ओर से इस दिशा में अतिरिक्त और आवश्यक प्रयास करने की आवश्यकता है और आचार्य विनोबा जी का यह संकल्प पूरा करने में अपना योगदान देने की आवश्यकता है, जिसे उन्होंने इस वाक्य के द्वारा अभिव्यक्त किया था— ‘हिंदी को गंगा नहीं, समुद्र बनाना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हिंदी भाषा के महत्व और स्थान को देखते हुए भी हम आशावित हो सकते हैं, क्योंकि जैसे ही किसी भाषा को देश की शिक्षा नीतियों (निःसंदेह पहले की शिक्षा नीतियों में भी हिंदी भाषा पर बात की गई थी) में अपना वास्तविक स्थान मिलता है तो भविष्य में संबंधित भाषा में रोजगार के नवीन क्षेत्रों के सृजन की संभावनाएँ भी प्रबल होती हैं। इस संदर्भ में हिंदी भाषा के शिक्षण से जुड़े शिक्षकों की भूमिका और महत्वपूर्ण बन जाती है कि वे अपनी पेशेगत प्रतिबद्धताओं के प्रति पूरी ईमानदारी बरतें और हिंदी भाषा के शिक्षण के प्रति अपनी विषयगत मजबूरी तथा उदासीनता के रवैए को त्यागकर हिंदी भाषा शिक्षण की नवीन रणनीतियों को अपनाएँ। यह तब ही संभव है जब एक हिंदी भाषा

शिक्षक स्वयं हिंदी भाषा के महत्व और भूमिका से परिचित हो, क्योंकि किसी भी भाषा को सीखना मात्र उसकी व्याकरणिक कोटियों पर महारत हासिल करने तक सीमित नहीं होता है, बल्कि इसमें संबंधित भाषा के ऐतिहासिक योगदान के साथ उनकी साहित्यिक जड़ों से जुड़कर वर्तमान में उसकी नई भूमिका और प्रयोग क्षेत्रों की ज़मीन तलाशना भी शामिल होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि जो भाषा रोज़गारोन्मुख नहीं होगी, वह निश्चित ही संकुचित हो जाएगी। इस दृष्टि से आज हिंदी भाषा में रोज़गार की अपार

संभावनाएँ हैं। हिंदी ने अपने रोज़गारपरक रूप के बल पर न केवल देशीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर अपना एक विस्तृत बाज़ार खड़ाकर अपने महत्व को स्थापित किया है। वैश्विक यथार्थ को समझने के लिए आज हिंदी भाषा किसी से पीछे नहीं है। आज विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा की स्वीकृति और प्रयुक्ति बढ़ी है और अब लोगों को कई क्षेत्रों में हिंदी में रोज़गार मिल रहा है। वास्तव में हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे स्वावलंबन की भाषा कहा जा सकता है। अपनी इसी विशेषता के कारण हिंदी भाषा के माध्यम से ज्ञान के विस्तार और विकास का अनंत क्रम निरंतर जारी है और आगे भी रहेगा।

संदर्भ

- दुबे, अभय कुमार. 2014. *प्रतिमान (समय, समाज, संस्कृति, जुलाई-दिसंबर)* पत्रिका, वाणी प्रकाशन.
- पाण्डेय, नंदकिशोर. 2016. *गवेषणा (जनवरी-जून)* पत्रिका, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा.
- मदान, अमन. 2018. *शिक्षा और आधुनिकता*. एकलव्य, भोपाल.
- मिश्र, गिरीश्वर. 2015. *बहुवचन*. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
- शर्मा, गोविन्द प्रसाद. 2022. *शिक्षा और समाज*. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली.